

Vol III Issue X April 2014

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Catalina Neculai University of Coventry, UK	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Horia Patrascu Spiru Haret University, Bucharest,Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences AL. I. Cuza University, IasiMore

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net



GRT

मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप

अनिमा

शोध छात्रा पी एच डी, (भूगोल) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

सारांश :-

मालवा प्रदेश मध्यप्रदेश का एक ऐसा क्षेत्र है जहां पारिस्थिकी पर्यटन विकास हेतु प्राकृतिक और ऐतिहासिक संसाधनों के विशाल भंडार मौजूद हैं परंतु उचित नियोजन के अभाव में यहां पर न केवल इन संसाधनों का क्षय हो रहा है अपितु हमारा पर्यावरण अवनयन भी हो रहा है। यह क्षेत्र पारिस्थितिकी पर्यटन की असीम संभावनाओं को अपने मे समेटे होने के बावजूद भी इको टूरिज्म के मंच पर पिछड़ा हुआ है जो क्षेत्र कभी विन्ध्यांचल की सुरम्य मेखला व नैसर्गिक सुन्दरता व वन्य जीवन के लिए विख्यात थी आज वहीं प्रदेश उचित संरक्षण के अभाव में वनस्पति व वन्य जीवन से विहिन होती जा रही है व साथ ही कई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक व पुरातात्विक धरोहर भी अपने अस्तित्व को खोते जा रहे हैं। अतः इन्हीं समस्याओं से बचने हेतु क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन प्रकाश में आया। जिसमें पर्यटन विकास से पर्यावरण को किसी प्रकार की क्षति नहीं होती है।

शब्द कुंजी पारिस्थितिकी पर्यटन, स्थानिक वितरण प्रतिरूप, निकटतम पड़ोसी बिन्दु।

प्रस्तावना :

पुरातत्व के दृष्टिकोण से मालवा का देश में महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ 2000वर्षों से भी अधिक समय की प्राचीन इमारतें व खण्डहर मौजूद हैं, जो आज भी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। कला एवं प्राचीन स्थापत्यों के बेशुमार स्मारक, प्राचीन कलाकृति के मंदिर, स्तूप, किले, राजसी महल आदि ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव के अनुसार पर्यटकों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करते हैं। देश के अनमोल शैल चित्र भी यहीं पर स्थित हैं, जैसे रायसेन की भीमबेटका, खरबई, कालीतलाई, हाथी पोल, पुतली करार, सागर में आबचंद, नरयावली, बरोदा, भोपाल में बरखेड़ा, मंदसौर में चतुर्भुजनाथ व राजगढ़ के दुर्लभ शैल चित्र इत्यादि। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से होल्कर वंश की राजधानी इन्दौर मालवा की शान है। यहाँ का राजबाड़ा, लालबाग, गांधी हॉल, शीश महल, कोंच महल इत्यादि दर्शनीय स्थल मौजूद हैं। भोपाल नगर जो परमार वंश के प्रसिद्ध राजा भोज के द्वारा 11वीं शताब्दी में निर्माण करवाया गया था, प्रसिद्ध ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्र भी है। यहाँ मस्जिदों का बाहुल्य है। अतः इसे मस्जिदों का शहर भी कहा जाता है। यहाँ की ताजुल मस्जिद जो भारत में ही नहीं वरन् एशिया में भी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त यहाँ जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, शौकत महल, चौक, इस्लाम नगर, कदीमी हमाम, इत्यादि ऐतिहासिक स्थल भी हैं। इसी प्रकार प्राचीन अर्वातिका और वर्तमान उज्जैन नगर न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य के शासन काल में उन्नति के शिखर पर आसीन था, यहाँ पर प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर प्रमुख आकर्षण का केन्द्र है। साथ ही भर्तहरी गुफा, कालिया देह महल, वेधशाला, विक्रम कीर्ति मंदिर आदि प्रमुख दर्शनीय स्थल यही पर स्थित हैं। इन्दौर से 90 किमी की दूरी पर माण्डू मालवा का प्रसिद्ध ऐतिहासिक केन्द्र है। वर्षा ऋतु के समय यहाँ पर्यटकों का आगमन सर्वाधिक रहता है। यहाँ की स्वास्थ्यप्रद जलवायु व प्राकृतिक सौन्दर्य से मुगल बादशाह जहाँगीर भी काफी प्रभावित थे। मालवा के अंतिम सुल्तान बाजबहादुर व रानी रूपमती की प्रणय गाथाएँ यहाँ के खण्डहारों में आज भी विद्यमान हैं। बौद्ध स्तूपों के लिए प्रसिद्ध साँची जो बौद्ध स्थापत्य कला के सभी रूपों – स्तूप, चैत्य, मठों व मंदिरों को प्रदर्शित करता है, विदेशी व देशी पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इसी प्रकार विदिशा से 7 किमी दूर उदयगिरी गुफाएँ, हेलीडोरियस, अष्टखंबा, ग्यारसपुर इत्यादि, चन्देरी जो 200 मीटर उँचे मुगलकालीन किले व खूनी दरवाजों के लिए प्रसिद्ध है। विश्व का सबसे बड़ा शैल चित्रों का भण्डार भीमबेटका जो 2003 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर की श्रेणी में सम्मिलित किया है तथा भोजपुर एवं बाघ गुफाएँ भी ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्रों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं।

संबंधित विषय के साहित्य का पुनरावलोकन

पर्यटन के अध्ययन के दृष्टिकोण से कई विद्वानों ने पर्यटन संबंधित साहित्य में अपने शोध पत्रों व लेखों के माध्यम से पर्यटन भूगोल के सर्वांगीण विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। बढ़ते हुए पर्यटन उद्योग के फलस्वरूप उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं से बचने हेतु तथा पर्यटकों की बदलती रुची को ध्यान में रखते हुए पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ावा दिया गया है। आल्पस पर्वतीय क्षेत्रों में 1970 ई. में पर्यटकों की बढ़ती संख्या से प्रभावित होकर स्थानीय अर्थव्यवस्था जब चरमरा गई थी तब ब्रन्डलैण्ड रिपोर्ट में धारणीय विकास की संकल्पना दी गई, जिसमें कहा गया था कि विकास ऐसा हो कि वर्तमान समस्याओं के लिए भविष्य को खतरे में न डाला जाए अर्थात् पर्यटन से स्थानीय समाज का नुकसान न हो। पारिस्थितिकी पर्यटन (इको टूरिज्म) शब्द का इस्तेमाल सर्वप्रथम हेक्टर सिबालोस लैसक्युरियम महोदय द्वारा मैक्सिको में 1987 ई. में किया गया। इसके अतिरिक्त श्री जॉन मार्शल, एम.बी. ग्रेड, डॉ. जे.पी.एच. वोल्डे, ई.बी. हेवल, डॉ. जामेस, एच कोसिन्स आदी विद्वानों ने वर्ष 1982 में बाघ की गुफाओं तथा वहाँ की सांस्कृतिक धरोहर एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का मुल्यांकन किया उसके पश्चात नाबी महोदय ने भी 2000 ई. में पर्यटन के सामाजिक और आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन किया है। पारिस्थितिकी पर्यटन को उस समय और भी लोकप्रियता मिली जब संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2002 को "पारिस्थितिकी पर्यटन और पर्वत श्रेणियों" के वर्ष के रूप में मानने की घोषणा की। उसी के पश्चात वर्ष 2002 ई. में डॉ. जगमोहन नेगी ने भारत के संदर्भ में सांस्कृतिक पर्यटन व पर्यावरण से संबंधित सिद्धांतों पर शोध प्रकाशित किया। रतनदीप सिंह ने वर्ष 2003 ई. में नेशनल इको टूरिज्म एण्ड वाईल्ड लाईफ टूरिज्म नामक पुस्तक में इको टूरिज्म व वन्य जीवन से संबंधित तथ्यों का विस्तृत अध्ययन किया है। ये सभी स्रोत मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों का विस्तृत प्रारूप तैयार करने के साथ निष्कर्ष पर भी पहुंचने में मददगार साबित हुए हैं।

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों पर वितरण प्रतिरूप समरूप, यादृच्छिक, पूंजीभूत प्रतिरूपों से कितना विचलित है यह ज्ञात करना है।

अध्ययन क्षेत्र

वर्तमान अध्ययन हेतु मालवा प्रदेश का चयन किया गया है जो मध्य प्रदेश की एक महत्वपूर्ण भौगोलिक इकाई है जिसके अंतर्गत राज्य के 16 जिले सम्मिलित हैं, यथा – नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, शाजापुर, राजगढ़, इन्दौर, उज्जैन, भोपाल, देवास, सीहोर, रायसेन, विदिशा, गुना तथा सागर। इसका भौगोलिक विस्तार 21054' उत्तरी अक्षांश से 23030' उत्तरी अक्षांश तक एवं 74024' पूर्वी देशांतर से 78029' पूर्वी देशांतर के मध्य तक है। इसका कुल क्षेत्रफल 105450 वर्ग कि.मी. है।

आंकड़ों के स्रोत एवं विधि तंत्र

क्षेत्र के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों के अध्ययन हेतु आंकड़ों को दो माध्यमों से संग्रहित किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के अंतर्गत व्यक्तिगत सर्वेक्षण के द्वारा जहाँ वर्ष 2011 व 2012 के मध्य चयनित पर्यटन केन्द्रों पर प्रश्नावली व साक्षात्कार के माध्यम से पर्यटकों के कार्यात्मक व व्यवहारिक आंकड़ें प्राप्त किए गए। वहीं द्वितीयक आंकड़ों के अन्तर्गत प्रकाशित स्रोतों, पर्यावरण व पर्यटन संबंधित पत्रिकाएं, इंटरनेट आदि से प्राप्त किए गए हैं। इन आंकड़ों के संकलन के उपरान्त उनका सारणीयन और विश्लेषण क्लार्क एवं इवान्स की बहुप्रचलित निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि के प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है।

मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों का स्थानिक वितरण प्रतिरूप

मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों का स्थानिक वितरण प्रतिरूप ज्ञात करने हेतु सर्वप्रथम प्रदेश के पर्यटन केन्द्रों को तीन वर्ग में विभाजित किया गया है यथा प्राकृतिक, ऐतिहासिक एवम धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र। ये सारे तत्व ना केवल पारिस्थितिकी पर्यटन की मूल जरूरतों को पूरा करते हैं बल्कि पर्यटन स्थल पर एक आकर्षक वातावरण का निर्माण भी करते हैं जो पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करता है। इन्हीं पर्यावरणीय तत्वों के आधार पर मालवा प्रदेश के पारिस्थितिकी पर्यटन स्थलों का चयन भी किया जाता है।

मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप स्पष्ट करने के लिये क्लार्क एवं इवान्स की बहुप्रचलित निकटतम पड़ोसी बिन्दु विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वप्रथम प्रदेश में वितरित सभी पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों को उनके निकटतम पर्यटन केन्द्रों से सीधी रेखाओं द्वारा जोड़ दिया गया है। तत्पश्चात निकटतम केन्द्रों की पारस्परिक दूरी ज्ञात की गई है। इसके आधार पर पर्यटन केन्द्रों की वास्तविक मध्य दूरी परिकलीत की गई है। उक्त मापों को ज्ञात करने के लिये प्रयुक्त विधि के अनुसार निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया गया है।

$$R_n = \frac{R_o}{R_e}$$

यहां पर

R_n = यादृच्छिकता से विचलन की मात्रा के निकटतम बिन्दु दूरी।

R_o = औसत दूरी जो दिशा को ध्यान दिये बिना सीधी नापी गई है।

R_e = अपेक्षित औसत दूरी

$$R_o = \frac{\sum r}{N}$$

यहां पर

$\sum r$ = निकटतम पड़ोसी दूरियों का योग

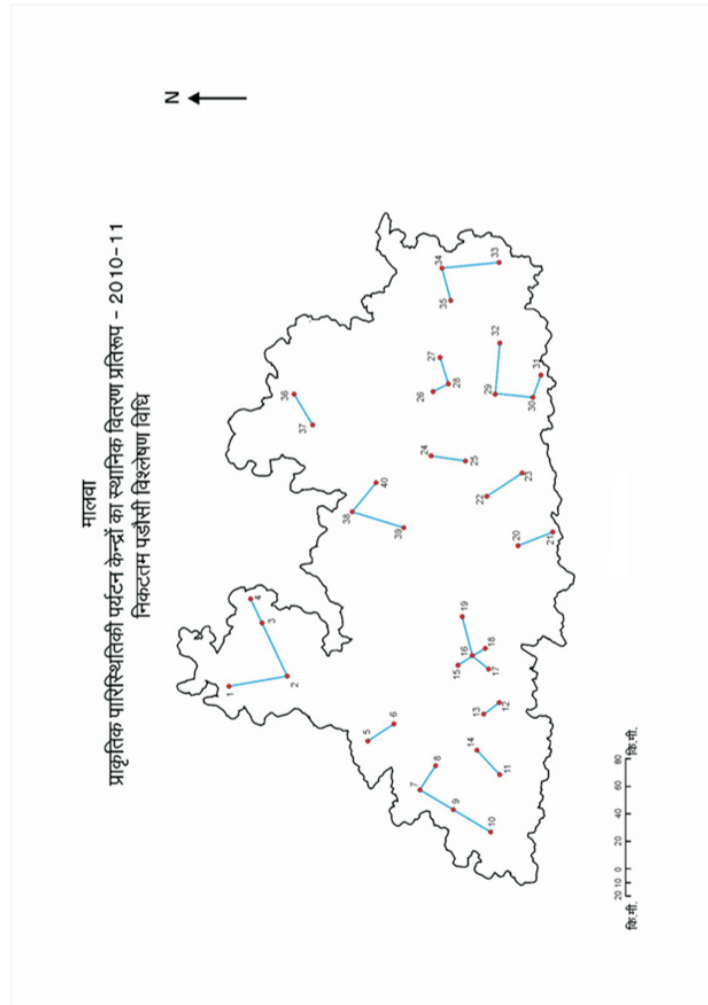
N = कुल आवर्ती केन्द्रों की संख्या

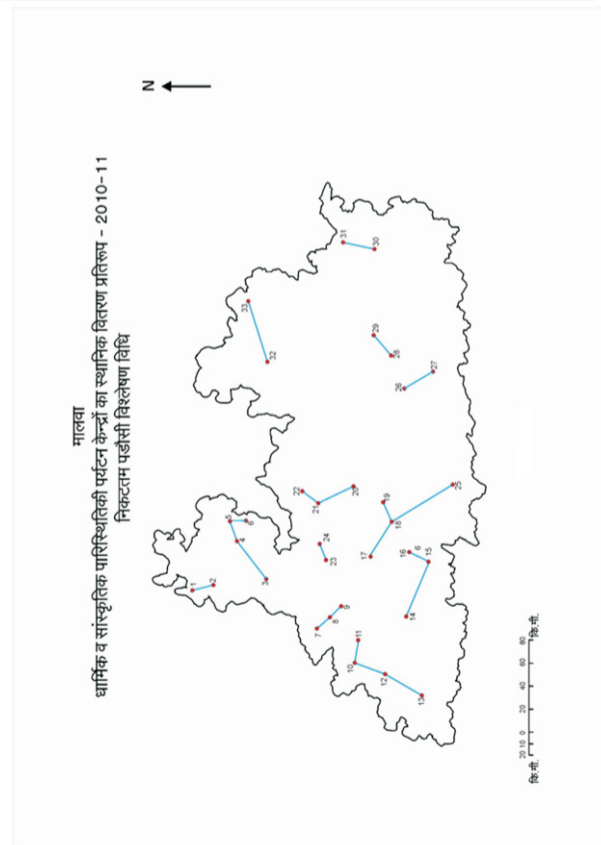
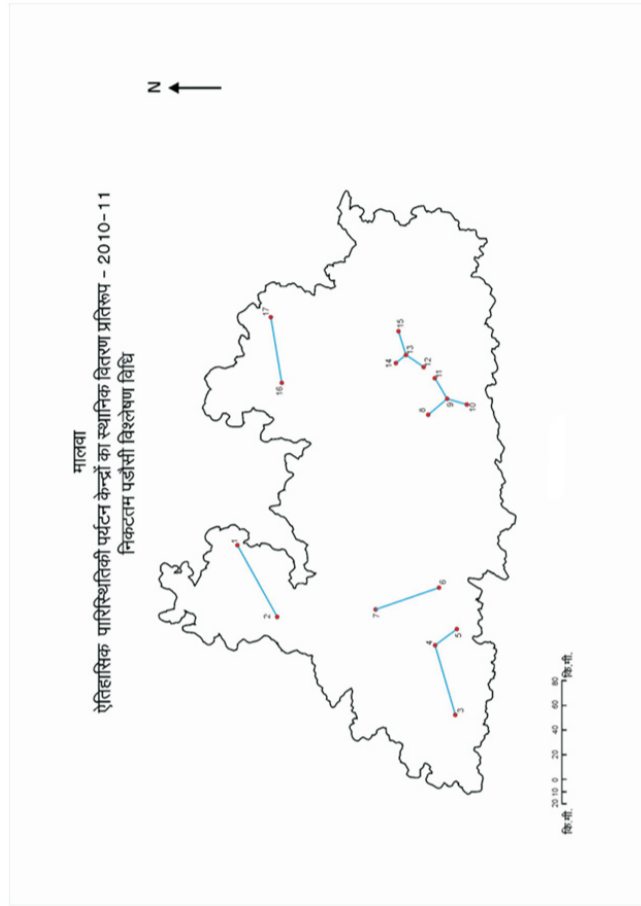
$$R_n = \frac{1}{2 \sqrt{N/A}}$$

यहां पर

N = कुल आवर्ती पर्यटन केन्द्रों की संख्या

A = कुल क्षेत्रफल





उपरोक्त सुत्र के आधार पर मालवा के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों का वितरण प्रतिरोध निर्धारण किया गया जिससे यह ज्ञात होता है कि प्राकृतिक पर्यटन केन्द्रों का त्द मूल्य 1.37 यादृच्छिकता के समीप है वहीं ऐतिहासिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्रों का त्द मूल्य 1.17 व 1.27 यादृच्छिकता के अधिक निकटता को दर्शाता है अतः पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्र का वितरण प्रतिरूप यादृच्छिक है।

निष्कर्ष

पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों के वितरण प्रतिरूप को स्पष्ट करने के लिए क्लार्क एवं इवान्स की बहु प्रचलित निकटतम पड़ोसी बिन्दू विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है, जिससे यह ज्ञात है कि चयनित पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों का वितरण प्रतिरूप यादृच्छिकता के अधिक निकट है, यथा – प्राकृतिक पर्यटन केन्द्र का आर.एन त्द मूल्य 1.37, ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्र का त्द मूल्य 1.17 एवं धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र का त्द मूल्य 1.27 है जिससे स्पष्ट होता है कि पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्र का त्द मूल्य यादृच्छिकता के अधिक समीप है। स्थानिक वितरण प्रतिरूप से यह भी ज्ञात होता है कि क्षेत्र के पारिस्थितिकी पर्यटन केन्द्रों में केवल शाजापुर व उज्जैन जिले ही ऐसे हैं जहाँ प्राकृतिक पर्यटन की संभावनाएँ कम हैं जबकि मालवा के मध्यवर्तीय भाग में ऐतिहासिक पर्यटन केन्द्र न्यून हैं, वहीं पूर्वी मालवा के अपेक्षा पश्चिमी मालवा में धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन केन्द्र अधिक हैं।

संदर्भ सूची

1. Clark P,J, & Evans F,C, 1954, Distance to nearest neighbor as measure of spatial relationship in population, ecology 35, pp 495-53
2. रावत ताज, 2002, पर्यटन विकास के विविध आयाम (पर्यावरण पर्यटन से पर्यटन विकास), तक्षशिला प्रकाश नई दिल्ली
3. हरिमोहन, 2002, सांस्कृतिक पर्यावरण और पर्यटन, तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली
4. मध्य प्रदेश शासन पर्यटन विभाग



अनिमा

शोध छात्रा पी एच डी, (भूगोल) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

Publish Research Article International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- * International Scientific Journal Consortium
- * OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net